ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in September 2025

बिहार की राजनीति में "गुंडाराज" से सुशासन तक : एक विश्लेषण

Tapan Kumar Das, Department of History, Purnea University, Purnea, tapankumardas7991@gmail.com
Prof.(Dr.) Anant Prasad Gupta, Department of History, Purnea University, Purnea

सारांश

बिहार विधानसभा की राजनीति परंपरागत रूप से जाति, धर्म और लैंगिक पूर्वाग्रहों से गहराई तक प्रभावित रही है। यह देखा गया है कि जाति आधारित राजनीति ने स्वतंत्रता के पश्चात से ही स्थानीय स्वशासन और राज्य सरकार की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1951 में हुए प्रथम आम चुनाव से लेकर 1967 तक बिहार की राजनीति एवं राजनीतिक दलों पर उच्च जातियों का वर्चस्व बना रहा। किंतु 1967 के बाद मध्यवर्ती जातियों तथा अनुसूचित जातियों का उभार हुआ और उन्होंने बिहार की राजनीतिक परिदृश्य में उच्च जातियों को प्रतिस्थापित करना आरम्भ कर दिया।

वर्तमान समय में बिहार की राजनीतिक प्रणाली में चार प्रमुख राजनीतिक दल हैं— राष्ट्रीय जनता दल (राजद), जनता दल यूनाइटेड (जदयू), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस। इन चारों के अतिरिक्त कई छोटे क्षेत्रीय दल जैसे राष्ट्रीय लोक समता पार्टी, हिन्दुस्तान आवाम मोर्चा, जन अधिकार पार्टी एवं लोक जनशक्ति पार्टी भी बिहार की राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं।

इन विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रयास रहता है कि वे अपनी-अपनी जातिगत आधारभूमि पर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाएँ। अधिकांश राजनीतिक दल स्वयं को किसी विशेष जाति जैसे यादव, भूमिहार, ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), पिछड़ा वर्ग (BC), दलित तथा महादलित से जोड़ते हैं। यह जुड़ाव मुख्यतः राजनीतिक लाभ और वोट बैंक की राजनीति के लिए किया जाता है।

वर्तमान में बिहार में सरकार जनता दल यूनाइटेड और भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन द्वारा चलाई जा रही है। बिहार की लगभग 52.47 प्रतिशत प्रमुख आबादी अशिक्षित है और लगभग 75 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। यहाँ की मुख्य जीविका कृषि और प्रवासी मज़दूरी है। बिहार की जनता आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सड़क, सिंचाई जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। बावजूद इसके लोग जातिगत राजनीति के पारंपरिक ढाँचे को ही अपनाए हुए हैं, जबकि व्यापक एवं समग्र विकास ही उनके बेहतर जीवनयापन का साधन हो सकता है।

प्रमुख शब्द (Key Words): बिहार, चुनाव, जाति, राजनीति

परिचय:

भारत की जाति व्यवस्था मूल रूप से एक "नस्लीय वर्गीकरण योजना" (race classification scheme) थी जिसे ब्रिटिश उपनिवेशी प्रशासक **हर्बर्ट होप राइज़ली** ने 1901 में भारत की पहली जनगणना के दौरान तैयार और लागू किया। ब्रिटिशों का मुख्य उद्देश्य भारत का शोषण और अपने स्वार्थ की पूर्ति था। सत्ता में बने रहने के लिए उन्होंने जाति और धर्म को अपनी *फूट डालो और राज करो* (divide and rule) नीति का हिस्सा बनाया ताकि भारतीय समाज की एकता और अखंडता को कमजोर किया जा सके, क्योंकि एकजुट भारत उनके प्रभुत्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती हो सकता था।

आज भी स्वतंत्र भारत में यही जाति व्यवस्था राजनीतिक दलों द्वारा वोट बैंक की राजनीति के लिए एक औजार के रूप में इस्तेमाल की जाती है और इसका भारतीय लोकतंत्र पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

बिहार, जो भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित है, दुनिया के सबसे प्राचीन आबाद क्षेत्रों में से एक है, जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि *नवपाषाण युग* तक जाती है। इस लंबे कालखंड में बिहार अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों का केंद्र रहा है।

यह वही भूमि है जहाँ से भारत के कई महान साम्राज्य उभरे और स्थापित हुए। दो प्रमुख धर्मों – *बौद्ध धर्म* और *जैन धर्म* – की उत्पत्ति भी यहीं से हुई। *गौतम बुद्ध* ने दक्षिण बिहार के *बोधगया* में ज्ञान प्राप्त किया और *महावीर स्वामी*, जैन धर्म के संस्थापक, का जन्म उत्तर बिहार के *वैशाली* में हुआ।

बिहार की संस्कृति सदियों से एक कठोर जाति व्यवस्था का पालन करती रही है, जिसने हर जाति के लोगों के जीवन और राज्य की राजनीति को प्रभावित किया। जाति बिहार की राजनीति का अभिन्न हिस्सा बन

गई है और राजनीतिक नेताओं ने लंबे समय से इसका उपयोग समाज को विभाजित करने और राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए किया है।

बिहार की सामाजिक और राजनीतिक जीवन में जातिवाद एक बड़ी चुनौती रहा है। यह नेतृत्व चयन)leadership recruitment) की प्रक्रिया में भी निर्णायक भूमिका निभाता आया है। स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न राजनीतिक नेता अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु जाति आधारित राजनीति करते रहे हैं।

जब चुनावों की घोषणा होती है, तो जाति और धर्म के आधार पर *गणितीय समीकरण* बनाए जाते हैं और उम्मीदवारों का चयन किया जाता है। स्वतंत्रता के बाद 1967 से मध्य जातियों (जैसे – कोइरी, कुर्मी, यादव, कुशवाहा) का उदय हुआ, जिन्होंने ऊँची जातियों की जगह राजनीति में ले ली।

1990 के बाद से बिहार की राजनीति पर क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का प्रभुत्व स्थापित हुआ, जिनमें प्रमुख हैं –

- जनता दल यूनाइटेड (JDU),
- राष्ट्रीय जनता दल (RJD),
- लोक जनशक्ति पार्टी (LJP),
- राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (RLSP),

इनका गठबंधन समय-समय पर भारतीय जनता पार्टी (BJP) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) से भी होता रहा है।

राष्ट्रीय जनता दल (RJD) – बिहार की प्रमुख क्षेत्रीय पार्टी, *वामपंथी विचारधारा* से प्रभावित, की स्थापना *श्री लालू प्रसाद यादव* ने 1997 में की थी। यादव समुदाय से आने वाले लालू प्रसाद यादव ने इस पार्टी की नींव *सामाजिक न्याय* और *धर्मनिरपेक्षता* के सिद्धांतों पर रखी।

पार्टी का *जनाधार* (mass base) मुख्य रूप से पिछड़ी जातियाँ रही हैं और इसे निम्न जातियों की राजनीति का *मुखर प्रवक्ता* माना जाता है। पार्टी का चुनाव चिन्ह **"लालटेन छाप"** आशा और विकास का प्रतीक बन गया। इस चिन्ह ने विशेष रूप से **यादव, मुस्लिम और अन्य पिछड़ी जातियों** को आकर्षित किया, जिन्हें मुख्यधारा से बाहर कर दिया गया था।

RJD का मुख्य एजेंडा हमेशा *धर्मनिरपेक्ष सरकार* बनाना रहा है। पार्टी ने लोगों को सरकारी नौकरियों, स्वास्थ्य सेवाओं, सड़क, सिंचाई, और अन्य बुनियादी सुविधाओं में प्राथमिकता देने का वादा किया।

लोक जनशक्ति पार्टी (LJP)

लोक जनशक्ति पार्टी बिहार की एक **महत्वपूर्ण क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टी** है, जिसकी स्थापना **श्री रामविलास पासवान** ने वर्ष 2000 में की थी। उन्होंने यह पार्टी **जनता दल (यूनाइटेड)** से अलग होकर बनाई। रामविलास पासवान स्वयं **अनुसूचित जाति (दलित)** से आते थे और दलित समुदायों में उनकी गहरी पकड़ थी।

उनका राजनीतिक नारा था – **"दलितों और वंचितों का सशक्तिकरण"**। उन्होंने विभिन्न दलित जातियों जैसे – पासवान, चमार, पासी, साहनी, नोनिया, डोम और अन्य को एकजुट करने का प्रयास किया। इस रणनीति ने बिहार की राजनीति के जातीय समीकरण को काफी बदला। इसके परिणामस्वरूप, 2005 के बिहार विधानसभा चुनावों में लोक जनशक्ति पार्टी ने अच्छा प्रदर्शन किया।

जनता दल (यूनाइटेड) – JDU

जनता दल (यूनाइटेड) की स्थापना **2003 में** हुई। इसे समाजवादी आंदोलन के दिग्गज नेता **जॉर्ज फर्नांडिस** के मार्गदर्शन में **समता पार्टी, लोकशक्ति पार्टी और जनता दल** को मिलाकर बनाया गया था।

यह पार्टी **राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA)** से जुड़ गई और दाएँ विचारधारा (Right-Wing Ideology) के प्रभाव में राजनीति करने लगी। JDU की मूल विचारधारा थी – **समाजवादी सरकार का निर्माण**, जिसमें पिछड़े और अनुसूचित जाति को प्रमुख भूमिका दी जाए।

2005 के बिहार विधानसभा चुनाव में, JDU ने RJD सरकार को हराकर सत्ता प्राप्त की। इसमें NDA का

मजबूत समर्थन और **सवर्ण जातियों (Forward Class)** का वोट निर्णायक साबित हुआ। यह सवर्ण वोट JDU की जीत में **"गेम चेंजर"** साबित हुआ।

अध्ययन का महत्व (Importance of the Study)

बिहार की राजनीति को समझने के लिए एक कहावत प्रचलित है: **"लोग वोट नहीं डालते, वे अपनी जाति डालते हैं।"**

इसका अर्थ है कि बिहार की राजनीति और समाज में जाति इतनी गहराई से जुड़ी हुई है कि चुनाव जातिगत समीकरणों के आधार पर तय होते हैं। सत्ता में बने रहने और वोट बैंक बढ़ाने के लिए राजनेता जातिगत तुष्टिकरण की नीति अपनाते हैं।

बिहार की जातियाँ और जनगणना (2011 Census)

बिहार की जनसंख्या में विभिन्न जातियों का अनुपात इस प्रकार है:

1. **पिछड़ा वर्ग (OBC/EBC) – 52%**
   - OBC: यादव – 15%, कुर्मी – 4%
   - EBC: कुशवाहा/कोयरी – 8%, तेली – 3.2%, अन्य मिलाकर – 26%
2. **अनुसूचित जाति (SC – दलित + महादलित) – 15%**
   - दुसाध – 5%
   - चमार – 5%
   - मुसहर – 2.8%
   - अन्य शेष
3. **मुस्लिम – 16.9%**
4. **सवर्ण (Forward Castes) – 15%**
   - ब्राह्मण – 5%
   - भूमिहार – 5%
   - राजपूत – 4%
   - कायस्थ – 1%
5. **आदिवासी (ST) – 1.3%**
6. **अन्य (ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध) – 0.4%**

राजनीति में जाति का प्रभाव

आज बिहार की विधानसभा राजनीति में जाति-तंत्र एक नए रूप में उभर रहा है। इसे अब **"पिछड़े और अनुसूचित जातियों के सामाजिक और राजनीतिक उत्थान"** के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि उनकी आवाज़ उनके जातीय नेताओं के माध्यम से विधानसभा तक पहुँच रही है।

- **पिछड़े, दलित और मुस्लिम समुदाय** अब बिहार की राजनीति में सरकार बनाने के लिए निर्णायक कारक बन गए हैं।
- **1990 से 2000 तक**, राष्ट्रीय जनता दल (RJD) ने लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में सत्ता पर कब्जा जमाए रखा।
- यादव, पिछड़े वर्ग और मुस्लिमों के बड़े पैमाने पर समर्थन से RJD का वर्चस्व बना रहा।
- वर्ष 2000 के बिहार विधानसभा चुनाव में RJD ने 243 में से **103 सीटें** जीतकर कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाई।
- बिहार की राजनीति में जाति सबसे प्रभावी तत्व है।
- सवर्ण से लेकर पिछड़े, दलित और मुस्लिम सभी समुदायों का वोट बैंक राजनीतिक दलों के लिए अहम है।
- LJP और JDU जैसे दलों ने अपने-अपने जातीय आधार पर राजनीति को प्रभावित किया।
- 1990 के बाद बिहार की राजनीति में पिछड़े वर्ग और दलितों का प्रभाव लगातार बढ़ता गया।

यह वह दौर था जब बिहार को पूरे देश में बदनाम नाम **"गुंडाराज"** (Jungle Raj) से पहचाना जाने लगा।

इस समय राज्य में भारी स्तर पर **भ्रष्टाचार, असंतोषजनक विकास नीतियाँ, हत्या, अपहरण, बलात्कार जैसे अपराध, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी** और **सड़क व संचार व्यवस्था का अभाव** आम बात बन गए थे।

लालू प्रसाद यादव का दौर

राजद (RJD) प्रमुख लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने अपने **व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए बिहार के गौरवशाली इतिहास को धूमिल किया**। उनकी राजनीति मुख्यतः **कुछ विशेष जातीय समूहों की भावनाओं को भुनाने** पर आधारित थी। नारे जैसे –

- "भूरा बाल साफ़ करो" (भू = भूमिहार, रा = राजपूत, बा = ब्राह्मण, ला = कायस्थ) जातिगत ध्रुवीकरण की राजनीति को और अधिक गहरा करते थे।

"चरवाहा विद्यालय" योजना

लालू का एक प्रयोग, जिसे पहले UNICEF ने सराहा था, **चरवाहा विद्यालय** था।

- उद्देश्य: 5 से 15 वर्ष के ग्रामीण बच्चों को, जो मवेशी चराते थे, शिक्षा देना।
- पहला विद्यालय मुजफ्फरपुर ज़िले के तुरकी गाँव में 25 एकड़ ज़मीन पर खोला गया।
- लेकिन बाद में यह योजना असफल हो गई क्योंकि शिक्षा पर वास्तविक ध्यान देने की बजाय केवल दिखावे पर ज़ोर रहा।

2001 की जनगणना के अनुसार बिहार की साक्षरता दर मात्र **43.54%** थी। "चरवाहा विद्यालय" जैसी योजनाओं के बावजूद शिक्षा में कोई बड़ा सुधार नहीं हो पाया।

2005: जेडीयू का उभार और नीतीश कुमार का "सुशासन"

2005 के विधानसभा चुनावों में **जदयू (JDU)** ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की।

- कुल 243 सीटों में से 153 सीटें हासिल कर नीतीश कुमार ने बिहार की सत्ता संभाली।
- यह जीत बिहार के लोगों की **सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव की उम्मीदों** का प्रतीक थी।
- इस बार वोट केवल जाति आधारित न होकर **अग्रवर्ण, पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति** – सभी तबकों से मिले।

नीतीश कुमार की नीतियाँ

- **शिक्षा सुधार** : 1 लाख से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति।
- **स्वास्थ्य सुविधाएँ** : प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण।
- **ग्रामीण विकास** : गाँवों में विद्युतीकरण और पक्की सड़कों का निर्माण।
- **महिला सशक्तिकरण** : महिला साक्षरता दर को लगभग आधा किया।
- **रोज़गार** : योजनाओं के ज़रिए लोगों की आय दोगुनी करने का प्रयास।

यह बदलाव लंबे समय तक चले भ्रष्टाचार और अपराध के दौर के बाद लोगों को राहत देने वाला था।

2020 का विधानसभा चुनाव

2020 के विधानसभा चुनाव में फिर से मुख्य रूप से **जातीय समीकरण** हावी रहे।

- राजद गठबंधन (UPA) और जदयू गठबंधन (NDA) सहित कई छोटे क्षेत्रीय दलों ने चुनाव लड़ा।
- **जाति आधारित वोट बैंक** ही चुनाव का मुख्य आधार बना, जबकि विकास का मुद्दा द्वितीयक रहा।

कार्यप्रणाली (Methodology)

इस अध्ययन में प्रयुक्त तथ्य मुख्य रूप से **सरकारी एजेंसियों, रिपोर्टों और आँकड़ों** से लिए गए हैं। अध्ययन **वर्णनात्मक और सैद्धांतिक** (descriptive & theorized) स्वरूप का है।

अध्ययन का उद्देश्य

2011 की जनगणना के अनुसार बिहार आज भी भारत के **सबसे पिछड़े राज्यों** में गिना जाता है। अध्ययन का उद्देश्य है:

- बिहार की विधानसभा राजनीति में **जाति व्यवस्था की भूमिका का विश्लेषण** करना।
- यह देखना कि लोकतंत्र केवल **मतदान के अधिकार** पर आधारित है, लेकिन **कम साक्षरता** जनता को न्यायसंगत निर्णय लेने से रोकती है।

समस्या की जड़

हालिया सर्वेक्षण से पता चला कि बिहार के लगभग **50% विधायक आपराधिक छवि** वाले हैं। जनता में उन्हें "बिहार का रॉबिनहुड" कहा जाने लगा। ये नेता दरअसल **जाति व्यवस्था की उपज** हैं।

समाधान

1. **शिक्षित नेतृत्व की आवश्यकता**

– यदि आपराधिक छवि वाले नेता जनता का विश्वास जीत सकते हैं, तो शिक्षित और ईमानदार नेता क्यों नहीं?

– अपराधी नेता जनता से सुख-दुख में साथ देने का वादा करते हैं, जबकि शिक्षित नेता अपने "सम्मान" को ठेस लगने के डर से दूर रहते हैं।

2. **NOTA का विकल्प**

– 2009 से लागू **NOTA (None of the Above)** उन दलों और नेताओं के खिलाफ़ सबसे बड़ा विरोध का माध्यम है जो केवल जाति आधारित राजनीति करते हैं।

3. **विकास आधारित राजनीति**

– बिहार को बचाने के लिए ज़रूरी है कि जनता ऐसे दलों और नेताओं को सत्ता से दूर रखे जो राज्य को और अधिक बर्बाद कर रहे हैं।

– निर्णय केवल और केवल **विकास के आधार पर** होना चाहिए।

निष्कर्ष:

मंडल आयोग (Mandal Commission) ने भारतीय राजनीति, विशेषकर बिहार की राजनीति में जातिवाद को और अधिक गहराई से स्थापित कर दिया। बिहार की लगभग 75% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ कम साक्षरता दर और न्यूनतम जागरूकता के कारण लोग अपने प्रतिनिधि का चुनाव *विकास नीतियों* के आधार पर नहीं कर पाते, बल्कि जातिगत समीकरणों पर कर देते हैं। यही कारण है कि बिहार का विकास बेहद धीमी गति से हुआ है।

समाज के सबसे निचले तबके — अनुसूचित जाति (SC) और पिछड़ी जातियाँ (OBC) — सदियों से ऐतिहासिक अन्याय का सामना करती रही हैं। जातिगत राजनीति का एक सकारात्मक पहलू यह है कि इन वंचित तबकों की आवाज़ अब मुख्यधारा की राजनीति तक पहुँचने लगी है। आज वे अपने जातीय नेताओं के माध्यम से अपनी समस्याएँ और संघर्ष नीति-निर्माण स्तर पर रख पा रहे हैं।

हालाँकि, इसका नकारात्मक पक्ष भी उतना ही गहरा है। चुनावों में उम्मीदवारों का चयन जातिगत समीकरणों के आधार पर होता है। नेता जातीय भावनाओं का इस्तेमाल अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए करते हैं। इसका परिणाम यह है कि बिहार में लोकतंत्र का आधार *विकास* नहीं, बल्कि *जातिगत समीकरण* बन गया है।

स्पष्ट व्याख्या:

1. **बिहार की ग्रामीण पृष्ठभूमि:**
   - 75% लोग गाँवों में रहते हैं।
   - शिक्षा और जागरूकता का स्तर कम है।
   - लोग विकास की बजाय जातिगत भावनाओं पर वोट डालते हैं।
2. **मंडल आयोग का प्रभाव:**
   - मंडल आयोग की सिफारिशों ने राजनीति में जातिवाद को संस्थागत कर दिया।
   - पिछड़े और दलित वर्गों की राजनीतिक आवाज़ मज़बूत हुई।
3. **सकारात्मक पहलू:**
   - वंचित जातियों के लोग पहली बार सत्ता और नीति-निर्माण तक पहुँचे।

- उनकी समस्याओं पर चर्चा और आवाज़ उठने लगी।

4. **नकारात्मक पहलू:**

- चुनाव उम्मीदवार जातीय आधार पर चुने जाते हैं, न कि योग्यता या विकास के आधार पर।
- नेता केवल जातिगत वोट बैंक को साधकर सत्ता में बने रहना चाहते हैं।
- इसका सबसे बड़ा नुकसान बिहार के विकास को हुआ है।

इस प्रकार, निष्कर्ष यह है कि बिहार की राजनीति में जातिवाद ने सामाजिक न्याय की राह तो खोली है, परंतु विकास को पिछे धकेल दिया है। वास्तविक विकास तभी संभव होगा, जब लोग जातिगत राजनीति से ऊपर उठकर *विकास आधारित राजनीति* को प्राथमिकता देंगे।

References (संदर्भ)

1. Rediff. (2013, September 30). *Lalu Prasad Yadav: The Shrewd Politician Highs and Lows*. Retrieved July 16, 2018, from [Rediff News]. **रेडिफ़ (2013, 30 सितम्बर). "लालू प्रसाद यादव: चालाक राजनेता के उतार-चढ़ाव". 16 जुलाई 2018 को रेडिफ़ न्यूज़ से प्राप्त।**
2. *Democracy Against Development*. (n.d.). [Publication/Source unspecified]. **"विकास के विरुद्ध लोकतंत्र". (तिथि अनुपलब्ध). स्रोत निर्दिष्ट नहीं।**
3. *National Level Party*. (n.d.). [Publication/Source unspecified]. **"राष्ट्रीय स्तर की पार्टी". (तिथि अनुपलब्ध). स्रोत निर्दिष्ट नहीं।**
4. *Janata Dal United: JDU Party History, Symbol, Founders, Election Result and Elections.* Archived from original on March 1, 2017. **"जनता दल यूनाइटेड: पार्टी का इतिहास, चुनाव चिह्न, संस्थापक, चुनाव परिणाम". मूल स्रोत से 1 मार्च 2017 को अभिलेखित।**
5. BBC News. (n.d.). [Specific report not cited]. **बीबीसी न्यूज़ (तिथि अनुपलब्ध). [विशिष्ट रिपोर्ट उद्धृत नहीं की गई]।**
6. The Times of India. (2017, August 19). *Nitish Kumar led resolution to join NDA*. **टाइम्स ऑफ इंडिया (2017, 19 अगस्त). "नीतीश कुमार का एनडीए में शामिल होने का प्रस्ताव"।**
7. Parsi, G. (2003, October 31). *Fernandez to head Janata Dal United*. The Hindu. Archived from the original on February 4, 2012. **पारसी, गर्गी (2003, 31 अक्टूबर). "जनता दल यूनाइटेड की कमान संभालेंगे फर्नांडीज़". द हिंदू. मूल स्रोत से 4 फ़रवरी 2012 को अभिलेखित।**